بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

DeenSahih Lecture Summary

किताब अत-तौहीद के चुनिंदा अध्याय।

चौथा बयान: सदाचारी लोगों के लिए अत्यधिक सत्कार।

शनिवार, 04 नवंबर 2024

वक्ता: शेख़ उवैस अत-तवील

१) शीर्षक अपने धर्म को पकड़े रहने का महत्व दिखाता है, जो मुख्य रूप से पैगंबरों की पुकार रही है - कि सिर्फ़ अल्लाह की ही पूजा करो। अल्लाह ने क़ुरआन में सूरह नहल में आयत नंबर ३६ में फ़रमाया - **"और हमने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत (वंदना) करो और तागूत (असुर- अल्लाह के सिवा पूज्यों) से बचो।"**

२) शीर्षक से हमें यह भी पता चलता है कि निवारण उपचार से बेहतर है, क्योंकि यह साफ़-जाहिर होता है की सदाचारी लोगों के प्रति अत्यधिक सत्कार कुफ़्र के कारणों में से है।

३) शीर्षक से यह भी समझ में आता है कि बुराई का ज्ञान रखना भी महत्वपूर्ण है, और उसके साधनों का भी, जैसा कि इस मामले में जहां बुराई का मतलब कुफ़्र है और सदाचारी लोगों को उनके स्तर से ऊपर उठाना उसका माध्यम है।

४) भाषा के अनुसार, अल ग़ुलू (अत्यधिकता) की परिभाषा सीमा को पार करना है। इस्लामी दृष्टिकोण से अल ग़ुलू इस्लामी क़ानून की सीमा को पार करना है। प्रमाण सूरह बक़राह, आयत २२९ में है: **"ये अल्लाह की सीमायें हैं, इनका उल्लंघन न करो और जो अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करेंगे, वही अत्याचारी हैं।"**

५) सदाचारी लोगों के प्रति अत्यधिकता उनकी प्रशंसा में तीव्र होने में है और उन्हें अल्लाह द्वारा दिये गये उनके स्तर से ऊपर उठाने में है तथा उनके प्रति उपासना के एक पहलू को संचालित करने में है।

६) यदि जब अत्याधिकता सदाचारी लोगों के मामले में कुफ़्र का साधन है, तो मूर्तियों, क़ब्रों और मज़ारों आदि के पूजन के मामले में यह और भी विशाल है।

७) अल्लाह ने हमें इसकी चेतावनी दी है क्योंकि यह हमसे पहले आने वाले लोगों की एक विशेषता थी, सूरह अन-निसा, आयत १७१ : **“हे अहले किताब (ईसाईयों!) अपने धर्म में अधिकता ना करो”**

८) अल्लाह ने ईसा अ़लहिस्सलाम के प्रति ईसाईयों के अत्यधिकता का खंडन किया है, यह कहते हुए कि वो और उनकी माँ सामान्य लोगों की तरह थे जो किसी को भी नुक़्सान या लाभ नहीं पहुंचा सकते थे सिवाय अल्लाह की इजाज़त से। सूरह अल-माइदा आयत

७५: **“मर्यम का पुत्र मसीह़ इसके सिवा कुछ नहीं कि वह एक रसूल है, उससे पहले भी बहुत-से रसूल हो चुके हैं, उसकी माँ सच्ची थी, दोनों भोजन करते थे (दूसरे इंसानों की तरह, जबकि अल्लाह नहीं खाता)।”**

९) ईसाई लोग ख़ुद पूजन के संबंध में भी अत्यधिकता में गए और उसमें बढ़ौतरी की - उसकी मात्रा में, उसकी प्रकृति में आदि। हमारे पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लहि व सल्लम) ने इस प्रकार की अत्यधिकता के ख़िलाफ़ चेतावनी दी जैसे कि उस हदीस में जिस में तीन लोग उनके पास आए और कहा कि वे पूरी रात नमाज़ पढ़ेंगे और सोएंगे नहीं, लगातार उपवास करेंगे और शादी नहीं करेंगे। नबी (सल्लल्लाहु अ़लहि व सल्लम) ने उनको कहा कि वो उनसे ज़्यादा ज्ञान वाले हैं और ज़्यादा अल्लाह से डरने वाले हैं, इसके बावजूद, वह नमाज़ भी पढ़ते हैं और सोते भी हैं, उपवास भी करते हैं और बिना उपवास के भी रहते हैं , और शादी भी करते हैं। और जो कोई भी उनकी सुन्नह से मुँह फेरता है तो वह उनमें से नहीं है।

१०) पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लहि व सल्लम) द्वारा अत्यधिकता के ख़िलाफ़ चेतावनी देने का अगला उदाहरण - हज के समय जब उनके कुछ साथी शैतान को पत्थर मारने के लिए बड़े पत्थर लाये, तो अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अ़लहि व सल्लम) ने इसे देखकर उनके लिए छोटे पत्थरों को आगे बढ़ाया और उन्हें बड़े पत्थरों को हटाने के लिए कहा। पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लहि व सल्लम) ने उन्हें अत्यधिकता से दूर रहने की शिक्षा दी, ये कहते हुए कि बेशक जिस चीज़ ने उनसे पहले की क़ौमों को बर्बाद किया (जैसे यहूदी और ईसाई), वह अत्यधिकता थी।

११) अल्लाह ने ईसाई लोगों के वंदना में नई मनगढ़ंत चीज़ें बढ़ाना और अत्यधिकता का खंडन किया जब उन्होंने संन्यासी बनने और विवाह न करने को धारण किया, सूरह अल-

ह़दीद, आयत २७ में: **"त्याग को उन्होंने स्वयं बना लिया, हमने नहीं अनिवार्य किया उसे उनके ऊपर।"**

१२) इस प्रकार, अतिवाद या अत्यधिकता दो प्रकार की होती हैं: एक - किसी व्यक्ति का उसके स्तर से ज़्यादा सत्कार करना और दूसरा अल्लाह के परिपूर्ण धर्म में नई मनगढ़ंत बातें शामिल करने के माध्यम से ख़ुद इबादत में अत्यधिकता करना।

१३) सदाचारी लोगों के साथ व्यवहार करने के संबंध में तीन तरीक़े हैं:

१. उन दीवाने लोगों का तरीक़ा, जो अत्यधिक जाते हैं और सदाचारी लोगों को अल्लाह के दिये हुए स्तर से ऊपर उठाते हैं; उनकी क़ब्रों पर बलि देते हैं, उनकी क़ब्रों को बड़ा बनाते हैं, उनके चारों ओर तवाफ़ करते हैं; और उनमें से कुछ लोग इस हद तक जाते हैं की वह यह विश्वास रखते है की सदाचारी लोग उनकी प्रार्थना (दुआ) सुन सकते हैं, और यह सब कुछ शिर्क है।

२. उन लोगों का तरीक़ा जो विपरीत दिशा में चले जाते हैं वो नबी (सल्लल्लाहु अ़लहि व सल्लम) के साथियों (अल्लाह उनसे ख़ुश हो) के सदाचारी लोगों को बुरा-भला कहते हैं और उनको नीचा दिखाते हैं, जैसा कि राफ़िदा (शी'आ) द्वारा किया जाता है। और नबी सल्लालहु अ़लइहि व सल्लम ने ख़ासकर अपने साथियों के बारे में बुरा बोलने से निषेध किया है।

३. तीसरा तरीक़ा संतुलित क़ौम का है, जो सदाचारी लोगों के साथ सही तरीक़े से व्यवहार करते हैं। वे उनकी सदाचारिता में, उनके अच्छे कथन में और उनके अच्छे कार्यों में उनका अनुसरण करते हैं। वे सदाचारियों को उनके तौही़द के लिए पसंद करते हैं और उसमें उनका अनुसरण करते हैं, और यह सुन्नह के लोगों का दृष्टिकोण है।

१४) सूरह नूह, आयत २३ के संबंध में: **"और उन्होंने कहा: तुम अपने इश्वरों को ना छोड़ना, ना तुम छोड़ना वद्द़ को, ना सुवा, ना यग़ूस्, ना याऊ़क़्, ना नसर्"** (ये उनकी मूर्तियों के नाम हैं); इब्न अब्बास (अल्लाह उन पर ख़ुश रहे) ने कहा कि ये नूह के लोगों के सदाचारी व्यक्तियों के नाम थे। और जब इन सदाचारी लोगों की मौत हो गई, तो शैतान ने बाक़ी लोगों को बहकाया की वो उनकी महिमा में मूर्तियाँ बनाकर उनको नाम दें और अपनी बैठकों में रखें। और उन्हें यह कहकर बहकाया कि मूर्तियाँ उनको उन सदाचारी लोगों के अच्छे कर्म, पूजा और वंदना की याद दिलाएंगी। शुरुआत में मूर्तियों

की पूजा नहीं की जाती थी। लेकिन जब मूर्तियाँ स्थापित करने वाली पहली पीढ़ी गुज़र गई, और लोग यह ज्ञान भुल गऐ, तो फिर उन्हें पूजा की प्रतिमाएँ मान लिया गया।

१५) पिछले बिंदु में दिया गया कथन लोगों को उनके स्तर से ऊपर उठाने में अत्यधिकता करने के ख़तरे को स्पष्ट रूप से दिखाता है, और शैतान के धोखे को व्यक्त कर देता है और यह भी कि वह खुला शत्रु है।

१६) हम इसी बिंदु (१४) से यह भी फ़ायदा निकाल सकते हैं कि धर्म में नई बातें गढ़ने की अनुमति नहीं है, चाहे वह अच्छा ही क्यों ना लगे। कयोंकि सदाचारी लोगों की मूर्तियाँ बनाना आदम (अ्लहिस्सलाम) से नूह (अ्लहिस्सलाम) के पहले तक किसी की पुकार नहीं थी, उनके बीच सभी पीढ़ियाँ तौही्द पर थीं। इसके अलावा, इस बिंदु में जीवित चीजों की तस्वीर बनाने के ख़िलाफ़ चेतावनी है और यह की ऐसा करना हमें कहाँ तक पहुँचा सकता है।

१७) इब्न अब्बास के यही कथन हमें ज्ञान की महत्वता को भी दिखाता है, तौही्द और सुन्नह का ज्ञान और नबी (सल्लल्लाहु अ्लहि व सल्लम) के तरीक़े का ज्ञान और उसके ख़िलाफ़ जो है, उसका ज्ञान। और इससे हमें विद्वानों (उ्लमा) जो नबियों के वारिस हैं, उनकी महत्वता का पता चलता है, जो ज्ञान, प्रमाण और सुबूत के साथ तौही्द की ओर पुकारते हैं।

१८) हमारे ईमान के संबंध में जो कुछ भी हम पढ़ते हैं, वह सभी तौही्द और अल्लाह के अलावा कोई भी वास्तविक रूप से पूजने योग्य नहीं है, इस पर लौटता है सदा।

१९) इसी कथन के संदर्भ में इब्नुल क़य्यिम ने कहा है कि सलफ़ (सदाचारी पूर्वज) में से बहुत से लोगों ने कहा कि जब इन सदाचारी लोगों की मौत हुई, तो लोग उनकी क़ब्रों के पास सीमित हो गये, और उनकी मूर्तियां बनाईं, और जब लम्बा समय बीत गया, लोग उन्हें पूजने लगे।

२०) जब हम सुन्नह का और अध्ययन करते हैं तो हम पाते हैं की नबी (सल्लल्लाहु अ्लहि व सल्लम) ने भी इस मुद्दे पर ज़ोर दिया और अपने लिए भी अत्यधिकता से दूर रहने की सलाह दी। नबी (सल्लल्लाहु अ्लहि व सल्लम) अल्लाह के सबसे नज़दीकी् थे और सारे नबियों की मुहर थे और अल्लाह की सबसे उत्तम रचना थे। इसके बावजूद, हदीस में आता है कि उन्होंने अपने राष्ट्र को शिक्षा दी ताकि उनकी प्रशंसा में अत्यधिकता ना करी जाए, जैसे ईसाईयों ने ईसा (अ्लहिस्सलाम) की प्रशंसा में अत्यधिकता की, और उन्हें सिर्फ़ अल्लाह के ग़ुलाम और उनके दूत के रूप में संभोदित करें।

२१) पिछले बिंदु में आई ह़दीस नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की विनम्रता को दिखाती है। और अल्लाह के बंदे होने की ख़ूबी बताती है, क्योंकि सबसे बेहतरीन सृष्टि मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लहि व सल्लम) भी अल्लाह के बंदे थे, हालांकि उनका स्तर सबसे ऊपर है। इसमें यहूदियों और ईसाईयों का खंडन है और ऐसे ही उन लोगों का जो अत्यधिकता करते हैं अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अ़लहि व सल्लम) के बारे में क्योंकि उनको (सल्लल्लाहु अ़लहि व सल्लम) अल्लाह का बंदा बताया गया है।

२२) सूरह अल कहफ़, आयत ११०: **"आप कह दें: मैं तो तुम जैसा एक मनुष्य पुरुष हूँ, मेरी ओर प्रकाशना (वह़ी) की जाती है कि तुम्हारा पूज्य बस एक ही पूज्य है। अतः जो अपने पालनहार से मिलने की आशा रखता हो, उसे चाहिए कि सदाचार करे और साझी न बनाये अपने पालनहार की इबादत (वंदना) में किसी को।"** यह आयत शुरू से अंत तक तौही़द का सूबूत है।

२३) एक और सूबूत है नबी सल्लालहु अ़लहि व सल्लम की हदीस में, जहाँ उन्होंने कहा कि जो अत्यधिकता करते हैं, वह नष्ट हो जाते हैं, और उन्होंने इसे तीन बार कहा।

२४) हर प्रकार की अत्यधिकता और अतिशयोक्ति अस्वीकृत है, और जो कोई भी कर्म अत्यधिकता से किया जाता है, वह स्वभाव से ही उसके विपरीत चला जाता है। इसका उदाहरण जैसे कोई सदाचारी लोगों का सम्मान करने का दावा करता है, लेकिन फिर उनके प्रति अत्याधिकता में चला जाता है, तो यह नाफ़र्मानी और शिर्क में गिरना हुआ।

२५) अल्लाह ने सीधे मार्ग पर स्थिर और संतुलित रहने का आदेश दिया है, जैसा कि सूरह हूद, आयत ११२ में आता है: **"अतः (हे नबी!) जैसे आपको आदेश दिया गया है, उसपर सुदृढ़ रहिये और वे भी जो आपके साथ तौबा (क्षमा याचना) करके हो लिए हैं और सीमा का उल्लंघन न करो, क्योंकि वह (अल्लाह) तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।"**

२६) महान साथी अब्दुल्लाह इब्न मस्ऊ़द (अल्लाह उन पर ख़ुश रहे) ने एक कथन में नई गढ़ी गई बातें, अत्यधिकता और दर्शनशास्त्र (फ़लसफ़े) के ख़िलाफ़ चेतावनी दी।

२७) कार्यों में संतुलन की विशेषता इस राष्ट्र को दूसरों से अधिक श्रेष्ठ बनाती है। और सुन्नह के लोगों की पुकार, तौहीद की ओर पुकार और शिर्क के ख़िलाफ़ चेतावनी इस संतुलन को बनाए रखती है, जैसा कि अल्लाह और उसके नबी (सल्लल्लाहु अ़लहि व सल्लम) की ओर से बताया गया है।

२८) जो लोग सोशल मीडिया पर भाषा में फ़लसफ़े और अत्यधिकता के उपयोग से लोगों को चकित करते है, वे आज के समय में कई हैं।

२९) संक्षेप में कहें तो, नबी (सल्लल्लाहु अ़लहि व सल्लम) और उनके अलावा किसी के साथ भी अत्यधिकता के ख़िलाफ़ चेतावनी देना आवश्यक है क्योंकि यह शिर्क की ओर ले जाता है। इसलिए यहूदियों और ईसाईयों के विशिष्ट तरीकों में उनका अनुकरण करना भी निषिद्ध है। पहले आए पाठों से हम यह भी लाभ उठा सकते हैं कि नबी सल्लालहु अ़लहि व सल्लम का आदर करना बताना नियती है इन तरीक़ों से - उन्हें अल्लाह का बंदा बताना, और उसका पैग़म्बर बताना और अल्लाह की तरफ़ पुकारने वाला बताना। पहले के पाठों से यह भी लाभ उठाते हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अ़लहि व सल्लम) की प्रशंसा इस प्रकार के गुणों के साथ करने का क़ानूनी प्रावधान है: वह अल्लाह के बंदे हैं,और उनके रसूल हैं और अल्लाह की ओर पुकारने वाले हैं।

३०) यह नबी (सल्लल्लाहु अ़लहि व सल्लम) के दया भाव में से है कि उन्होंने अत्यधिकता से चेतावनी दी, और इसी तरह यह भी दया भाव की निशानी में से है की कोई अत्यधिकता से चेतावनी देता है यह जानके के अत्यधिकता कहाँ तक ले जा सकती है।

ऑडियो लिंक: https://www.deensahih.com/wp-content/uploads/2023/11/chapter-18-excessive-reverence-for-the-righteous-shaykh-uways-at-taweel.mp3